

(C-4 → Language
Across the
Curriculum)

Unit - 4

भाषा शिक्षण का परिचय :-
(Introduction of Language Teaching)

भाषा शिक्षण का परिचय :- कोई भी भाषा को सीखना हो तो सर्वप्रथम उस भाषा में बार्तालाप करना जरूरी होता है। बिना बोले भाषा सीखी और सिखाई नहीं जा सकती है। भाषा शिक्षण की शुरुआत मौखिक भाषा से होती है। मौखिक भाषा को मुख्यतः दो रूपों में सिखाया जा सकता है। एक रूप वह है जिसमें शिक्षक तथा छात्र सीधे भाषा को बोलते हैं और इस प्रकार ध्वनि प्रतीकों की सहायता से एक-दूसरे के विचारों को ग्रहण करते हैं।

दूसरा रूप वह है जिसमें शिक्षक और छात्रों के मध्य में पाठ्य-पुस्तक वही रहती है उसमें लिखित भाषा को ध्वनि में परिवर्तित किया जाता है जिसे वाचन कहा जाता है। इसको सफल बनाने के लिये कहानी, सम्भाषण प्रसंग और रीति का उपयोग किया जाता है।

भाषा कक्षा - कक्ष :-

भाषा कक्षा - कक्ष वह स्थल होता है जिसमें छात्र और शिक्षक दोनों ही उपस्थित होते हैं। कक्षा - कक्ष में एक ही भाषा सीखने वाले छात्र होते हैं। छात्र प्रश्न पूछता है, शिक्षक उत्तर देता है। छात्रों की भाषा संबंधी अशुद्धियों पर ध्यान दिया जाता है तथा समय - समय पर उनके उच्चारण, व्याकरण तथा वर्तनी एवं वाक्य संबंधी अशुद्धियों का संशोधन किया जाता है।

आवृत्ति का महत्व :-

आवृत्ति का अर्थ है - बार-बार करना अथवा बारम्बार दोहराना। बच्चों को आवृत्ति की सहायता से ही भाषा

का ज्ञान दिया जा सकता है। जैसे की धारणाओं में सीखने के तीन निम्न में से एक नियम अभ्यास तथा आवृत्ति का है। कोई भी जटिल से जटिल कार्य बार-बार करने से उसमें निपुणता आ जाती है। आवृत्ति के महत्व

को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है :-

1. इससे बोलने से प्रवाहपूर्णता आ जाती है।
2. भाषा सीखते समय उच्चारण में शुद्धता आती है, ध्वनि के उतार-चढ़ाव तथा स्वरघात ठीक प्रकार से बनते हैं।
3. आवृत्ति से बोलने में निपुणता आती है।
4. आवृत्ति से वाक्यों का गठन अर्थपूर्ण बनता है।
5. आवृत्ति से छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है।
6. आवृत्ति से शब्द-ज्ञान सक्रिय रहता है।
7. आवृत्ति के द्वारा अशुद्ध उच्चारण, द्विच-किचाहट, भय, लज्जा आदि को सरलता से दूर किया जा सकता है।

आवृत्ति के सम्बन्ध में शिक्षकों को निम्नलिखित बातों का ध्यान देना चाहिए -

1. आवृत्ति यांत्रिक नहीं होनी चाहिए।

2. जिन शब्दों एवं वाक्यों की आवृत्ति की जाती है उनका उपयोग प्रत्यक्ष रूप से कैसे करना है उसका सही ज्ञान होना चाहिए।

3. इसकी क्रिया आसान होनी चाहिए। छात्रों की बुद्धि को जानकर आवृत्तियों की संख्या कम तथा ज्यादा होनी चाहिए।

4. आवृत्ति के पश्चात् छात्रों को स्वतंत्र रूप से बोलने का अवसर देना चाहिए।

5. आवृत्ति के पश्चात् छात्रों को विचारों की तरफ उन्मुख करना आवश्यक है।

6. एक ही प्रकार के वाक्यों में तरह-तरह के शब्दों के प्रयोग द्वारा वाक्य की वास्तविकता कायम रखते हुए सिखाया जाए।

* कक्षा - कक्ष में भाषा - शिक्षण की दृष्टि से अध्यापन के सिद्धान्त :-

विद्वानों के मतानुसार भाषा शिक्षण की दृष्टि से निम्नलिखित सिद्धान्त हो सकते हैं :-

1. बोलचाल या अभ्यास का सिद्धान्त :-

विद्यालय के अंदर हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत इत्यादि सभी भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं। ऐसे में शिक्षण को चाहिए की कक्षा - कक्ष में छात्रों को बोलने के अधिक से अधिक अवसर मिलना चाहिए। जिनसे की छात्रों में एक से अधिक भाषा का अभ्यास करने की क्षमता का विकास हो लगे क्योंकि अभ्यास के द्वारा कुछ भी सिखा जा सकता है।

2. व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त :-

हर व्यक्ति एक दुसरे से भिन्न होता है। विद्यालय में छात्रों के अंदर व्यक्तिगत भिन्नताये पायी जाती हैं; उनकी योग्यताओं में शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं में सीमाओं में रुचियों में प्रवृत्तियों तथा अभिप्रायों में, कौशलों में सांवेगिक सन्तुलन में भिन्नता पायी जाती है।

अतः छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को मध्यनजर रखते हुए शिक्षण प्रदान करना चाहिए। इससे बालकों की कठिनाइयाँ व्यक्तिगत रूप से ठीक होंगी और उनका शिक्षण प्रभावशाली होगा तथा छात्र अभिलम्ब ही भाषा में प्रवीणता प्राप्त कर सकेंगे।

3. स्वाभाविकता का सिद्धान्त :-

छात्र - छात्राओं को भाषा की शिक्षा देने समय स्वाभाविकता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। परिवार में रहकर बालक पहले पहल अपनी मातृभाषा सीखता है। विद्यालय में भी इस बात का प्रयास करना चाहिए कि इसे सबसे पहले मातृभाषा में प्रवीण बनाया जाए फिर उसे अन्य भाषाओं की शिक्षा प्रदान की जाय।

4. क्रियाशीलता का सिद्धान्त :-

बालक स्वभाव से ही क्रियाशील प्राणी है वह कभी भी निष्क्रिय नहीं बैठ सकता। वह हर समय कुछ न कुछ करता ही रहता है। पढ़नु कक्षा में बालक को निष्क्रिय रूप से बैठने के लिए विवश किया जाता है। भाषा शिक्षण के समय भी इस बात का प्रयास करना चाहिए कि यह क्रियाशीलता बनी रहे। केवल अध्यापक बोलता रहे और बालक चुपचाप सुनता रहे - यह ठीक नहीं है।

5. उत्प्रेरणा या रुचि का सिद्धान्त :-

कार्य को करने के लिये छात्रों में अगर रुचि के प्रति रुचि उत्पन्न कर

दिमा जाद से वह उसे निष्ठा एवं तपस्वी
के साथ शिखता है।

भाषा शिक्षण में कवि
उत्पन्न करने के लिये निम्नलिखित प्रयास
किये जा सकते हैं।

- (i)- चित्रों का प्रयोग।
- (ii)- छात्रों के साथ अनुभूतिपूर्ण व्यवहार।
- (iii)- प्रयोगात्मक विधि अपनाना।
- (iv)- अट्ठा काम करने पर शास्त्री और
इनाम देना,
- (v)- प्रयोग और उदाहरणों आदि के द्वारा पाठ
को रोचक बनाना।
- (vi)- व्याकरण के पाठ में आगमन विधि
का प्रयोग।
- (vii) खेल विधि द्वारा शिक्षण।

5. अनुकरण का सिद्धान्त :-

अनुकरण की प्रवृत्ति बहुत तीव्र भाषा में
पाई जाती है - इस तथ्य से हम सभी
जुली - माँति परिचित हैं। भाषा को
सीखने में भी अनुकरण की प्रवृत्ति
बड़ी सहायक है।

वर्णमाला को सीखना, शब्दों
और उनके अर्थों को सीखना तथा
पढ़ना एवं लिखना सीखना - इन सभी
क्रियाओं में अनुकरण की ही प्रवृत्ति
काम करती है।

7. अनुक्रम का सिद्धान्त :-

विषय का ज्ञान अर्जित करने से पहले
उसके सीखने का उचित क्रम जानना जरूरी
होता है। भाषा शिक्षण में यह खास
रूप से ध्यान देने की जरूरत होती

है कि सबसे पहले छात्रों को मौलिक रूप से शिक्षण कराना चाहिए जब छात्रों की भाषा ठिक-ठिक बोलने आ जाए तब उन्हें लेखन कला का ज्ञान देना चाहिए फिर अंत में उन्हें उस भाषा के तथ्यों का भाव या अभिव्यक्ति की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

शिक्षण प्रदानाव्य का शिक्षण सूत्र :- शिक्षाविदों

और मनोविज्ञानियों ने समय-समय पर इस बात पर विचार किया है कि कक्षा अध्यापन के लिये किन-किन सिद्धान्तों को अपनाया जाना चाहिये। इन सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है :-

1. सरल से कठिन की ओर :-

इस प्रदानाव्य का यह तात्पर्य है कि सबसे पहले विद्यार्थियों के सामने सरल शब्द, सरल वाक्य आदि रखें। फिर धीरे-धीरे कठिन करते हुए अपने उद्देश्यों तक पहुँचें।

2. स्थूल से सूक्ष्म की ओर :-

यह व्यक्ति जो भी ज्ञान प्राप्त करता है उसका मूल आधार इन्द्रियजनित अनुभव ही है। इसलिए पहले स्थूल बालकों के सामने स्थूल तथ्य प्रस्तुत किए जाएँ। अतः दृश्य-श्रव्य तथा वास्तविक साधनों का प्रयोग करते हुए छात्रों को सूक्ष्म तथ्यों की ओर ले जाना चाहिए।

3. ज्ञात से अज्ञात की ओर :- यदि बालक को कुछ ज्ञान है तो उसे नवीन ज्ञान का सम्बन्ध उसके पूर्ववर्ती ज्ञान से के साथ कर दिया जाता है।

तो वह उसे जल्दी ग्रहण कर लेगा और प्राप्त ज्ञान उससे मस्तिष्क में स्थिर हो जाएगा।

4. विशेष से सामान्य की ओर :-

अभिप्राय यह है कि विद्यार्थियों के सामने पहले विशेष तथ्य रखे जाएं और फिर उन्हें सामान्य नियमों या सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया जाए।

5. अनिश्चित से निश्चित की ओर :-

जब विद्यालय में आता है तो उसका ज्ञान अनिश्चित एवं अस्पष्ट होता है, एक शिक्षक का यह कर्तव्य होता है कि वह यह स्पष्टता प्रदान करे।

6. पूर्ण से अंश की ओर :-

वस्तु को एक पूर्ण इकाई के रूप में देखता है शिक्षक को यह ध्यान देना चाहिए कि इकाई को खण्ड करने हुए शिक्षण करना चाहिए।

7. अनुभव से तर्क की ओर :-

का अभिप्राय यह है कि अध्यापक विद्यार्थियों को पहले इन्द्रिय-जनित अनुभव कराए।

8. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा शिक्षा :-

अभिप्राय यह है कि अध्यापक विद्यार्थियों को पहले इन्द्रिय-जनित अनुभव कराए।

9. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर :-

जब हम किसी वस्तु या शब्द अथवा भाव आदि का विश्लेषण करते हैं तो इतना ही पर्याप्त नहीं होता विश्लेषण के बाद उनका संश्लेषण करने एक सुस्पष्ट भाव या विचार की ओर विद्यार्थियों को उन्मुख किया जाना चाहिए।